Hkkjrh; y?kq fp=.k 'kSyh esa fpf=r [ksy lEcU/kh fp=ksa dk dykRed v/;;u

¼lnHkZ 16oha ls 17oha 'krkCnh½

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuofl©Vh½ n;kyckx] vkxjk ls fp=dyk esa ih&,p-Mh- dh mikf/k gsrq izLrqr 'kks/k çcU/k dh :ijs[kk

'kks/k funsZf'kdk

डॉ. नमिता त्यागी

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय

'kks/k Nk=k

तूलिका तिवारी

fp=dyk foHkkx] dyk ladk;

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuofl©Vh½

n;kyckx] vkxjk& 282005

2020

'kks/k ladYiuk

मानव संस्कृति के साथ–साथ कला का विकास यथार्थ से काल्पनिक दि”ाा की ओर निरन्तर होता रहा है। मानव के मनोगत भावों को व्यक्त करने हेतु शब्द, संकेत, मुद्रा, चिन्ह, आदि का प्रयोग ही कला का प्रारम्भ रहा। आदि काल से ही मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने हेतु रेखाओं व रंगों का सहारा लिया, जिसके रुप निरन्तर मानसिक विकास के साथ विकसित व परिवर्तित होते रहे हैं, इसके फलस्वरुप वह साहित्य, संगीत, मनोरंजन आदि की सृष्टि कर सका। आज ये जगत आ”चर्यजनक कलाओं से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होता है तथा दृ”यकला श्रेणी की विभाजित विधाओं में चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्यकला बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चित्रकला के अन्तर्गत लघु चित्रण कला परम्परा भारत की प्राचीन कला है, जो भारत की समृद्ध कला परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस चित्र शैली का प्रारम्भ 10वीं शती में ताड़पत्रों पर हस्तलिखित धार्मिक व पौराणिक कथा 'प्रजापारमिता' की सचित्र पोथी के साथ माना जाता है। जो बौद्ध धर्म से सम्बन्धित थी तथा 999 ईसवी की निर्मित थी, यह प्रारम्भिक शैली अपभ्रं”ा लघु चित्र शैली के नाम से जानी गयी।

लघु चित्र बड़ी तीव्रता से 15वीं से 19वीं शताब्दी में भारत में बने। इनकी विषय–वस्तु मुख्यतः धार्मिक, सामाजिक, पौराणिक, नायक–नायिकाओं, बारहमासा, रागमाला आदि अनेक काव्य ग्रन्थों पर आधारित थी। सामाजिक जीवन के चित्रांकन पक्ष में अनेक चित्र ऐसे प्राप्त होते हैं जो विभिन्न प्रकार के खेलों से सम्बन्धित हैं जिनका अंकन कलाकारों ने अपनी–अपनी रचनात्मकता के साथ बहुतायत से किया है। यह चित्र अपने संयोजनों में अनूठे हैं।

खेल मनुष्य के साथ जीवन में प्रारम्भ से ही समाहित हैं। जन्म के दो वर्ष के उपरान्त ही बालक स्वयं को खेलों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। खेल उसकी दिनचर्या में समाहित मनोरंजन का साधन होता है और यही उसको समाज से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

खेल, कई नियमों एवं सिद्धान्तों द्वारा संचालित होने वाली एक प्रतियोगी गतिविधि है। खेल सामान्य अर्थ में उन गतिविधियों को कहा जाता है, जहाँ प्रतियोगी की शारीरिक क्षमता खेल के परिणाम

का एकमात्र अथवा प्राथमिक निर्धारक होती है। खेलकूद सार्वजनिक रूप से शारीरिक शक्ति तथा मानसिक विकास के अच्छे माध्यम माने जाते हैं।

edMxy d vulkj, "खेल व्यक्ति की सुरक्षा विकास और वृद्धि के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।"

gjykd d vulkj, "खेल का सम्बन्ध उस किया से है जिसमें प्रसन्नता मिलती है जब वह उस कार्य का करने के लिए स्वतन्त्र होता है जो वह करना चाहता है।"

भारतीय कलाएँ भी इस गतिविधि से प्रभावित रही है भारतीय कला में अनेकानेक ऐसे उदाहरण हैं, जिनमे खेलों की अभिव्यक्ति की गयी है। वाकाटक काल में निर्मित एलोरा की रामे”वर गुफा में माता पार्वती और भगवान ि”ाव को चौपड़ खेलते हुए प्रद”र्िात किया गया है, यह एक मूर्ति”ाल्प है, जो देवी–देवताओं का खेलों के प्रति प्रेम को प्रद”र्िात करता है। कालिदास के सुप्रसिद्ध महाकाव्य मेघदूत में भी खेलों का वर्णन उत्साह के साथ किया गया है, जिसमे छिपाए हुए खजाने को ढूँढने जैसे खेलों का वर्णन प्राप्त होता है। राजकुमार सिद्धार्थ ने अपनी पत्नी य”ाोधरा को प्राप्त करने हेतु तीरंदाजी प्रतियोगिता में शानदार जीत हासिल की थी। इसका मूर्ति”ाल्प इंडोने”ािया के बोरोबूदर मंदिर में निर्मित है।

इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहीत भरहुत की रेलिंग पर बने नट–करतब के दृ”य भी उल्लेखनीय है, जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बने निर्मित हैं। भारत का प्राचीन व सुप्रसिद्ध विषय जिसमे श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन का पांचाल राज्य की सुंदर रानी द्रोपदी को मछली का नेत्र भेदन करके प्राप्त किया था इस विषय को होयसल मूर्तिकला और विजयनगर चित्रकला में प्रमुख स्थान प्राप्त है। विभिन्न प्रकार के खेलों से सम्बन्धित भारतीय साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये खेल बच्चों, साधारण मनुष्य, धनी व्यक्ति, ग्रामीण व्यक्ति आदि के द्वारा खेले दृष्टव्य हैं। इस प्रकार भारतीय कला संग्रह में चाहे वह चित्रकला, मूर्तिकला, पांडुलिपियाँ, सजावटी कला अथवा मुद्रा कला हो सभी में खेलों के सुन्दर प्रतिनिधित्व प्राप्त होते हैं।

खेल आधारित चित्रों का अभिनव रचनात्मक रूप हमें भारतीय लघु चित्रण की विभिन्न शैलियों में भी दृष्टव्य है, जहाँ कलाकारों ने अत्यन्त मनोयोग से विभिन्न खेलों के दृ”यों को सुन्दर संयोजनों में

रूपांकित किया है। यह सभी चित्र समयकाल की वि”ोषताओं से युक्त, कलाकार की अप्रतिम प्रतिभा के परिचायक हैं।

इन लघु चित्रों में विभिन्न खेलों को स्थान प्राप्त है जो समय वि”ोष में लोगों की रूचि एवं खेलों के प्रति सद्भाव को भी द”र्ाते हैं। चित्रों में पुरूष, स्त्री, बालक, राजा एवं जनता सभी को संलग्न दिखाया गया है। कुछ खेल जिनमे केवल राज परिवार प्रदर्”ात है तथा कुछ खेल जिनमे आम जनता का प्रद”र्न है। इन प्रमुख खेलों में ि”ाकार, चौगन, चौपड़, तीरन्दाजी, मल्ल–युद्ध, नट–करतब व इ”कबाजी, नि”ाानेबाजी, पतंगबाजी, लुक्का छिपी प्रदर्”ात है।

lkfgR; iukoykdu

शोध कार्य के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन शोध कार्य हेतु मार्ग प्र”ास्त करता है तथा शोध का अतीत से सम्बन्ध स्थापित करता है। अपने शोध विषय हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालय में संग्रहीत प्राचीन कृतियों में खेल सम्बन्धी चित्रों को देखा, तथा उनसे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया। यह चित्र भारतीय लघु चित्रण शैली से सम्बन्धित हैं। इन चित्रों का अध्ययन करने के लिए 'भारतीय पुरातत्व विभाग' आगरा के पुस्तकालय का भ्रमण किया। इस विषय से सम्बन्धित सामग्री के लिये 'ने”ानल गैलरी ऑफ मॉडर्न ऑर्ट– नई दिल्ली' राष्ट्रीय संग्रहालय– नई दिल्ली, आगरा यूनिवर्सिटी सेन्ट्रल लाइब्रेरी, आगरा आदि का भ्रमण एवं पुस्तकालयों में पुस्तकों का अध्ययन किया।

इनमें से कुछ प्रमुख पुस्तकों का अध्ययन निम्नवत् है–

लेखक एम. एस. रन्धावा की पुस्तक Indian Miniature से मुझे भारतीय लघु चित्रण के सन्दर्भ में ज्ञान अर्जन हुआ। लघु चित्रण की विभिन्न शैलियाँ, उनका उद्भव एवं विकास तथा उन शैलियों में निर्मित Thomas Arnold द्वारा लिखित Indian Miniature खेल सम्बन्धी चित्रों का अध्ययन किया। Dr. Daljeet, Dr. V.K. Mathur, Rajeshwari Shah द्वारा लिखित Fragrance in colour, Indian Miniature Painting from the collection of the National Museum यह पुस्तक राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहीत लघु चित्रों के संग्रह पर आधारित है, जिसके माध्यम से मुझे मुगल, राजपूत एवं पहाड़ी शैलियों की कुछ शैलीगत वि”ोषताएँ एवं खेल सम्बन्धी चित्रों के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त हुई, यह पुस्तक चित्रों से सुसज्जित है, जो लघु चित्रों की विभिन्न शैलियों में निर्मित चित्रों की वि”ोषताओं को पृथक–पृथक

प्रकट करती है। Percy Brown, द्वारा लिखित Indian Painting under the Mughals, A.D. 1550 to A.D. 1750, Oxford, 1924 के माध्यम से मुगल शैलीगत तत्वों तथा मुगल शैली में निर्मित खेल के कुछ चित्र देखने को मिले।कि”ोरी लालवैद्य, पहाड़ी चित्रकला, 1959 रामगोपाल विजयवर्गीय, राजस्थानी चित्रकला, 1953, इन पुस्तकों के माध्यम से सम्बन्धित विषय के ऐतिहासिक परिवे”ा, विषय–वस्तु, शैलीगत वि”ोषताओं की जानकारी हुई।

इन सभी पुस्तकों के संदर्भ से मैंने विभिन्न खेलों के प्रकार एकत्र किए, जो लघु चित्रों की विभिन्न शैलियों में निर्मित थे। शोध अध्ययन के माध्यम से सम्बन्धित खेलों की विस्तृत जानकारी एवं उनके कलापूर्ण वैभव को प्रस्तुत किया जायेगा।

ifjdYiuk

परिकल्पना का प्रमुख प्रयोजन शोध कार्य की सफलता एवं उसकी वैधता का परीक्षण है। खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ समाज के लोगों के मनोबल को द”ाती हैं, जो मनुष्य जीवन में प्रेरणा, उत्साह एवं आपसी सम्बन्धों का संचार करती है। इसके महत्व को समझते हुए कलाकार भी इनसे प्रभावित रहे, तथा चित्र रूपों में प्रकट करते आये हैं जिसके साक्ष्य हमें प्राचीन काल से वर्तमान काल तक प्राप्त होते हैं। जिनके माध्यम से तत्कालीन समाज का खेलों के प्रति दृष्टिकोण व खेल भावना का ज्ञान होता है। खेल विषय–वस्तु पर आधारित चित्र लघु चित्रण की विभिन्न शैलियों में दृष्टव्य होते हैं। लघु चित्र अपने कलात्मक सौन्दर्य के लिए बहुत प्रतिष्ठित माने जाते हैं। इन विभिन्न शैलियों का अध्ययन करते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "भारतीय लघु चित्रण शैली में चित्रित खेल सम्बन्धी चित्रों का कलात्मक अध्ययन" में उसकी विषय–वस्तु की रचनात्मकता, संयोजन कु”ालता व भाव प्रवणता के अनुरूप इस अध्ययन को प्रस्तुत किया जायेगा।

mn~ns';

- प्राचीन काल से वर्तमान समय तक मानव में खेलों की सशक्त अभिव्यक्ति को प्रकट करना।
- भारतीय कला में खेल सम्बन्धी चित्रों के उद्भव एवं विकास का विश्लेषण।
- तत्कालीन समाज की खेलों के प्रति रूचि, समुदाय के प्रत्येक पक्ष की भागीदारी एवं खेल के प्रति जागरूकता का अध्ययन।

- प्राचीन काल के खेल एवं अनेक स्वरूपों का चित्रगत प्रदर्शन तथा उनकी कलात्मक रचनात्मकता का विश्लेषण।
- भारतीय लघु चित्रों में चित्रित विभिन्न खेलों से सम्बन्धित कलाभिव्यक्ति का शैलीगत विशेषताओं के आधार पर कलातमक अध्ययन।

pj

- कला प्र"ांसक एवं समीक्षक
- स्थानीय भ्रमण एवं अध्यक्षों से साक्षात्कार
- विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय

dk;Z iz.kkyh

1- **vuqlU/kku vfHkdYi%&**यह शोध कार्य वस्तु–विश्लेषण विधि व वर्णात्मक अनुसंधान विधि पर आधारित होगा।

iznÙk ladyu

तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित होगा।

izkFkfed L=ksr%

खेल पर आधारित लघु चित्रों का मौलिक चित्रण एवं सम्बन्धित स्थान का भ्रमण।

f}rh; L=ksr

साक्षात्कार, लेख–पुस्तकें, प्रका"ित पत्र–पत्रिकाऐं, समाचार–पत्र, वेबसाइट्स व संग्रहालयों के संग्रहकर्त्ता आदि।

iznÙk ladyu dh izfdz;k

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया अस्मभावय विधि के अन्तर्गत अवलोकन साक्षात्कार व संग्रहालयों में संग्रहीत छाया चित्रों के वि"लेषण पर आधारित होगा।

lhek,¡

इस शोध के अन्तर्गत भारतीय शैली के लघु चित्रों का विवेचन समाहित है, तथा मैने शोध सीमा को ध्यान में रखते हुए 16वीं से 17वीं शताब्दी में चित्रित खेल सम्बन्धी चित्रों का चयन किया है। जिसके फलस्वरुप शोध विषय का वर्णन 150–200 के प्रतिद”ा के आधार पर किया जायेगा।

vk/kfud ;qx e: ikl fxdrk

मानव की प्रत्येक क्रिया का मूल आधार उसका शरीर है। उसके क्रियाकलाप चाहे वैचारिक हों अथवा शारीरिक दोनों में ही उसके शरीर का संतुलन एवं समुचित विकास होना नितांत आवश्यक है और यह विकास मानव खेल द्वारा ही कर सकता है। खेल का व्यक्तित्व पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। खेल से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। वर्तमान समय में भारतीय खेल जगत काफी उपलब्धियों भरा रहा है, जिसमें एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बॉक्सिंग, फुटबाल, क्रिकेट, टेनिस, तीरंदाजी, शूटिंग, गोल्फ, आदि में खिलाड़ियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर खेलों के वर्चस्व को बढ़ाया, इसके साथ ही मैरी कॉम, कर्णम मल्लेश्वरी, पी0 टी0 उषा, साइना नेहवाल आदि सुप्रसिद्ध महिलाओं का खेलों में योगदानरहा है। यदि प्राचीन काल की बात करें, तो भारत के प्रसिद्ध ग्रन्थ रामायण और महाभारत में चौपड़, द्यूतक्रीड़ा, रथदौड़, निशानेबाजी प्रतियोगिता भारत के प्रसिद्ध खेलों से हमें अवगत कराता है। जिनमें प्राचीन युग से वर्तमान तक संजोए गए लघु चित्रों की विभिन्न शैलियों में हमें अनेक प्रकार के खेल देखने को मिलते हैं, जिन्हे कलाकारों ने अपनी–अपनी योग्यता के अनुसार चित्रित किया है, इसी के अन्तर्गत मैने अपने शोध का विषय चुना, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक खेलों के सम्बन्ध व उसकी महत्वता को प्रदर्शित करेगा।

'kks/k lajpuk

Hkwfedk % खेलों का महत्व एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति।

izFke v/;k; % भारतीय लघु चित्र (राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी) शैली का संक्षिप्त परिचय

1.1 भारतीय लघु चित्र शैली का ऐतिहासिक परिदृ”य।

1.2 लघु चित्रण की विभिन्न उप शैलियों का कलात्मक विकास।

f}rh; v/;k; % भारतीय कला एवं खेल चित्र

2.1 भारतीय कला में खेल सम्बन्धित चित्रों का ऐतिहासिक वि”लेषण।

2.2 भारतीय कला में खेल सम्बन्धी चित्रों का परिवर्तित रूप।

r`rh; v/;k; % भारतीय लघु चित्रों में निर्मित विभिन्न खेलों का विवेचन।

3.1 नट करतब

3.2 मल्ल–युद्ध

3.3 पतंगबाजी

3.4 तीरंदाजी

3.5 चौपड़

3.6 लुक्का छिपी

3.7 f”ाकार

3.8 इ”क बाजी

3.9 तलवारबाजी

3.10 चौगन

3.11 नि”ानेबाजी

3.12 घुड़सवारी

3.13 शतरंज

prqFkZ v/;k; % खेल सम्बन्धी चित्रों का कला तत्वों के आधार पर अध्ययन

iape v/;k; % खेल सम्बन्धी लघु चित्रों की शैलीगत विशेषताऐं

milagkj

ifjf'k"V

- सन्दर्भ ग्रन्थ
- Bibliography
- Internet website
- चित्र–सूची

vuqla/kku vfHkdYi

Hkfedk &इसके अन्तर्गत प्राचीन काल से मानव जीवन में उपस्थित खेलों का महत्व, उनका उद्भव व कला परिदृ”य में विभिन्न खेलों की कलात्मक अभिरूचि के प्रति कलाकारों की रूचि को प्रदर्”ात किया जाएगा।

iFke v/;k; &यह अध्याय दो खण्डों में विभाजित है, दो खण्डों के अन्तर्गत भारतीय लघु शैली का परिचय, उनका ऐतिहासिक परिदृश्य व लघु चित्रण की विभिन्न उप–शैलियों के कलात्मक विकास को प्रस्तुत करूँगी।

f}rh; v/;k;&इस अध्याय को दो उपभागों में विभाजित किया गया है तथा प्रथम भाग के अन्तर्गत भारतीय कला में खेल सम्बन्धी चित्रों को लक्ष्य बनाकर विभिन्न कलाओं में उनसे सम्बन्धित प्रमुख चित्रांकन मूर्तन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की जायेगी। द्वितीय बिन्दु के अन्तर्गत खेल चित्रों के परिवर्तित स्वरूप व विकसित रूप को प्रस्तुत किया जायेगा।

r`rh; v/;k;&इस अध्याय के अन्तर्गत लघु चित्रों में निर्मित विभिन्न प्रकार के खेलों का वर्णन, जिसके अन्तर्गत खेल का परिचय, उद्भव, विकास, उनका महत्व व भारतीय लघु चित्रण की विभिन्न शैलियों में उनकी कलापूर्ण अभिव्यक्ति को अंकित किया जायेगा। इसके अन्तर्गत नट–करतब, तीरंदाजी, शिकार, चौगड़, चौपड़ आदि के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायेगा।

prqFkZ v/;k;&चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न शैलियों में निर्मित खेल सम्बन्धी चित्रों का कलापूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया जायेगा जो चित्रकला के तत्वों व संयोजनात्मक सिद्धान्तों पर आधारित होगा।

iape v/;k;&इस अध्याय के अन्तर्गत चित्रों की विभिन्न शैलियों के आधार पर शैलीगत विशेषताएँ प्रस्तुत की जायेगी।

milagkj&वर्तमान समय में अध्ययन की प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया जायेगा।

Bibliography

- Agrawal, V.S. 1961, Indian Miniature, an album, Archaeology Government of India, New Delhi
- Agrawal, Rashmi Kala 2006, Early Indian Miniature PaintingSandeep Prakashan, Delhi
- OhriandRoy,Vishwa Chander 1998,Painter of the Pahari Schools, Marg Publications, vol 50, No. 1 September
- Randhawa, M.S. 1981, Indian Miniature Painting, Publication, NewDelhi
- Daljeet,Mathur V.K., Shah Rajeshwari 2003,Fragrance in Colours, Indian Miniature Paintings from the collection of the National Museum,New Delhi
- Khandalavala, Karl 1959, Pahari Miniature, Bombay
- Chakraverty, Anjan 1996, Indian Miniature Painting, Published Luster Press

lUnHk xzFk &

- अग्रवाल, श्यामबिहारी 1999, भारतीय चित्रकला का इतिहास, रूपशिल्प प्रकाशन, इलाहाबाद
- वैद्य कि”ोरी लालः 1959, पहाड़ी चित्रकला
- विजयवर्गीय, रामगोपाल : 1953, राजस्थानी चित्रकला, विजयवर्गीय एलबम
- वर्मा, महेन्द्रः 2006, भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कलाप्रका”ान, 2421–ए, नारंग कॉलोनी, त्रिनगर
- बुद्ध, अमित अर्जुन : 2013, शारीरिक ि”ाक्षा इन्साइक्लोपीडिया, लक्ष्य पब्लिके”ान, नई दिल्ली

Internet Websites

- www.rajput.miniaturepainting.com
- www.rajsthanstudies.com
- https://booksgoogle.com
- https://nationalmuseumindia.gov.in
- https://wikipedia.org/wiki/ukf;dk
- https://www.bhu.ac.in
- https://www.art-of-the.day.info
- https://indianexpress.com

Babur witnessing wrestling bouts illustration to Baburnama. Mughal; 1598 AD. National Museum; Acc. No. 50.336.

Shiva and Parvati playing chaupar (Basauli style Rasmanjiri) C 1694-95

"Desakha Raga" man climbing down a pole surrounded by other men playing a game, painted on paper, c 1610 (Provincial Mughal Style)

Women Playing Polo C 1660 (Mewar Style)